सच्चे आनंद की प्राप्ति

इन्सानी ज़िन्दगी (मनुष्य जीवन) का आदर्श क्या है? मनुष्य जीवन का मिलना एक बड़ी खुशकिस्मती की बात है जिसका ख़ास ध्येय यह है कि हम परमात्मा का अनुभव करें और दुनियावी प्रपंच से छुटकारा पावें. अगर यह क़ीमती ज़िन्दगी इस ध्येय की पूर्ति के लिए न लगाई गई तो इन्सान और जानवर की ज़िन्दगी में कोई फ़र्क नहीं. अगर हम सच्चे भक़्त बन जायें तो हम कर्मों के जंजाल से छूट जायेंगे और हमें इंद्रियों के जंजाल से हमेशा-हमेशा के छुटकारा मिल सकता है.

हम दुनियावी मामलों के बारे में सोचते रहते हैं. जब तक हम ख़्वाहिशात उठाते रहेंगे, हम कभी ख़ुश नहीं रह सकते. जब हमारा मन और बुद्धि ईश्वर की तरफ़ लग जाती है तभी हमें सच्ची ख़ुशी हांसिल होती है. परमात्मा की तरफ़ तब्ज्जह (attention -ध्यान) लगाने और हमेशा-हमेशा को इस प्रपंच से छूटने और सच्ची ख़ुशी प्राप्त करने का साधन यहीं है कि हम परमात्मा से मिलने की ख़्वाहिश जगायें और हर समय उसे याद रखें.

ईश्वर हर समय और हमेशा हमारे दिल में रहता है लेकिन हमें उसके दर्शन तभी हो सकते हैं जब हम अपने मन को वासनाओं से साफ़ कर लेंगे. हमें उस तक पहुँचने के लिए ख़्वाहिश उठानी चाहिये. उसको हमेशा याद रखना चाहिये. उस तक पहुँचने का जतन करना चाहिये. उसी की बात सोचना चाहिये और आखिर में अपने आप को पूरी तरह उसके सुपुर्द कर देना चाहिये. जब हम पूरे तौर से अपने आप को उसको समर्पण कर देते हैं तब हमें अपने अन्तर में उसके दर्शन होते हैं और हमारी खुदी, जो हमारे और उसके बीच में परदा है, और जिसकी वज़ह से हम उसका अपने घट में हर समय रहते हुए भी दर्शन नहीं कर पाते, हमेशा के लिए जाती रहती है. ऐसा आदमी ईश्वर का ही रूप हो जाता है. उसको सिर्फ़ शांति और आनंद ही नहीं मिलता, बल्कि इसके साथ -साथ वह ईश्वर के कामों का ज़रिया बन जाता है जिससे दुनिया का सबसे बड़ा उपकार होता है. वह पृथ्वी पर ज़िस्म में ईश्वर रूप होकर रहता है और उसकी पूजा भी ईश्वर के समान होतीं है.

ईश्वर अपने भक्तों की पूजा करता है . गीता में लिखा है कि वह भक्त जिसको ज्ञान हो गया है या जिसने मोक्ष प्राप्त कर ली है, सचमुच ईश्वर है. सचमुच जब एक भक्त पूर्ण रूप से ईश्वर में समर्पण करके, उससे मिलकर एक हो जाता है तो वह ईश्वर हो जाता है. हम दुनियाँ के अन्दर बाहरी चीज़ों को हासिल करते हैं. लेकिन ऐसे भक्तों ने पूर्ण रूप से अपनी अपने मन को जीत लिया है और तब अपनी खुदी को ईश्वर में मिला दिया है, ईश्वर को पा लिया है. ऐसी महान आत्माएं जगत के लिये वरदान हैं. उन्होंने अपनी ज़िन्दगी को दूसरों के

लिए ईश्वर प्राप्ती का एक साधन बना दिया जिसका सहारा लेकर मनुष्य उस महान शक्ति ईश्वर तक पहुँच सकता है. इसीलिये इस इन्सानी ज़िन्दगी का लक्ष्य उस ईश्वर को जो इसके अन्दर रहता है, प्रकट करना है. हमको चाहिये कि हम आहिस्ता-आहिस्ता दुनियावी ज़िन्दगी से अपने मुँह को अन्दर की तरफ़ मोड़ें और उस ईश्वर को अपने ही अन्दर पायें. तभी हमको सच्ची ख़ुशी हासिल हो सकती है.

"ईश्वर के नाम का जाप ईश्वर तक पहुंचाता है ". साधारण मनुष्य के लिए जो दुनियाँ में फँसा हुआ है ईश्वर तक पहुँचने के लिये सबसे सरल उपाय यही है कि ईश्वर के नाम का उच्चारण बराबर किया जाये. उसके नाम का उच्चारण करने से वह उसे उस ईश्वर से मिला देता है जो उसके दिल में रहता है. जितना ही वह इस पवित्र नाम का उच्चारण करता जायेगा वह अपने अन्दर उस परमात्मा के नज़दीक पहुँचता जायेगा. अपने अन्दर की बुराइयों को निकालने, आनन्द और ईश्वर को हासिल करने का इससे आसान तरीक़ा और कोई नहीं है. नाम के उच्चारण से केवल मन ही शुद्ध नहीं होता बल्कि नाम भक्त को भगवान से मिला देता है.

मैं नाम की बरक़त जो आपको सुना रहा हूँ, यह अपना ही तज़र्बा नहीं है बल्कि दुनियां के सभी संतों का यही तज़र्बा है. इसीलिए मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि ईश्वर की सच्ची भक्ति करो. उसमें सच्चा विश्वास लाओ. तब सारे जगत में ही उस ईश्वर के दर्शन होंगें. ईश्वर का नाम लेने में कोई दिक्कत नहीं है. उसके लिए कोई ख़र्च भी नहीं करना पड़ता, न कोई ख़ास तरीक़ा बैठने का है और न किसी चीज़ की ज़रूरत है.

तुम उसका नाम हर समय हर जगह ले सकते हो. इस अभ्यास से कुछ दिनों बाद खुद-व- ख़ुद तुमको अपने अन्दर शब्द सुनाई देगा. तुम्हारे अन्दर ईश्वर का प्यार ख़ुद- व-ख़ुद ही पैदा हो जायेगा और दिन-व-दिन उससे नज़दीक़ी होती जायेगी .

राम संदेश : दिसम्बर २००३